Acknowledgement

आभार :-

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के प्रणयन में जिन विद्वानों के सहयोग एवम् जिस सहायक शोध सामग्री के उद्धरणों और सन्दर्भों से इसे समृद्ध बनाया गया है, शोधकर्त्री उन सभी का सहृदय आभार प्रकट करती है।

सर्वप्रथम शोधकर्त्री विद्धता की साक्षात प्रति-मूर्ति श्रद्धेय गुरुश्री प्रो. द्वारकानाथ भौंसले जी के निर्देशन में शोधकार्य करने का सुअवसर प्राप्त करके गौरान्वित हुई। उनके आशीर्वाद एवं बहुमूल्य परमार्शों तथा श्रेष्ठ पथ - प्रदर्शन के द्वारा ही इस शोधग्रन्थ का कार्य सम्पन्न हो सका अन्यथा शोध प्रबन्ध का इस रुप में परिणित होना काल्पनिक था। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की सम्पूर्णता में उनका मार्ग-दर्शन एवम उनकी आत्मीयता ही शोधकर्त्री के उत्सुक मन को उत्प्रेरित कर सदा सक्रिय बनाती रही है अतः उनकी सुखद सहज प्रेरणाओं के लिए केवल तुच्छ शब्दों में "आभार" व्यक्त करना सम्भव ही नहीं है।

"मैं नम्रता-पूर्वक आदरणीय गुरु जी को शत शत् नमन करती हूँ।"

स्वयं को सौभाग्यशाली मानते हुए, "ख्यातनाम" बड़ौदा म्यूजिक कॉलेज के पूर्व आचार्य सुप्रतिष्ठित संगीत शास्त्री प्रो. आर. सी. महेत्ताजी सर के प्रति अपनी भावनाओं को रोक नहीं पा रही हूँ, प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के विषय चयन व कुशल मार्गदर्शन से ही प्रबन्ध कार्य आरम्भ हो सका। मैं उनके चरणों में सादर नमन करती हूँ।

Faculty of performing arts के Dean डॉ. प्रो. महेश चंपकलाल जी एवम् कण्ठ संगीत विभाग के Head श्री पंडित ईश्वर चन्द्र जी के प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ जिन्होनें समय-समय पर शोधकार्य के लिए मुझे प्रोत्साहित किया एवम् शोधकार्य पूर्ण करने में सहयोग दिया।

नृत्य विभाग के रीडर श्री पंडित हरीश गंगानी जी (कत्थक) एवम् लेकचरर श्री पंडित जगदीश गंगानी जी (कत्थक) का मैं सहृदय आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होनें मुझे शोधप्रबन्ध सहायक जानकारी प्रदान कर शोधपूर्ण करने में मुझे सम्यक सहयोग दिया।

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के मुख्य पुस्तकालय, श्रीमती हंसा मेहता पुस्तकालय, संगीत विभाग पुस्तकालय (बड़ौदा) राजस्थान के विभिन्न पुस्तकालयों, जवाहर कला केन्द्र (जयपुर) संगीत नाटक अकादमी (जोधपुर), भारतीय लोककला मण्डल (उदयपुर) व अन्य सभी पुस्तकालयों में जहाँ से मुझे विशेष अलभ्य पुस्तकें व सामग्री संकलन हेतु विशेष सहायता प्राप्त, उनके प्रति अनुग्रहित व आभारी हूँ।

मेरे चाचाजी व चाची जी एवं बूआ-फूफाजी व परिवार के सभी सदस्यों के प्रति आभार प्रकट नहीं किया जा सकता उनके द्वारा दिए गये स्नेह तथा आशीर्वाद में जो भावना छिपी होती है, उसे मात्र कुछ शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता, इनके अमिट सहयोग अथवा स्नेह एवम् समय-समय पर प्रोत्साहन बढ़ाकर इस कार्य को पूरा करने की प्रेरणा से ही शोध कार्य पूर्ण हो सका।

शोध प्रबन्ध को इस रुप में प्रस्तुत करने के लिए टाइपिस्ट परमार रमेशभाई जी से सहायता प्राप्त हुई, उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं।

इनके अतिरिक्त जो जाने अनजाने शोधकर्त्री के प्रेरणा स्त्रोत रहे हैं, उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

इन्हीं शब्दों के साथ शोधकर्त्री का प्रयास प्रस्तुत है :-